पूर्व प्राथमिक शिक्षा में शिक्षण-अधिगम विधियाँ

रीना रानी*

शिक्षण एक जटिल सामाजिक प्रक्रिया के साथ-साथ निरंतर चलने वाली उद्देश्यपूर्ण विकास प्रक्रिया भी है। शिक्षण के लिए औपचारिक वातावरण चाहिए, लेकिन यह अनौपचारिक वातावरण में भी संभव है। मनोविज्ञान ने विभिन्न शिक्षण-विधियों की व्याख्या की है। इन शिक्षण विधियों से शिक्षिका को परिचित होना आवश्यक होता है। विभिन्न उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए भिन्न-भिन्न शिक्षण-अधिगम विधियों का प्रयोग करना पड़ता है। शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित करने व पाठ्यक्रम बनाने के बाद शिक्षा के उद्देश्यों को सार्थक, उद्देश्यपूर्ण रोचक व उपयोगी बनाने के लिए शिक्षिका को किसी न किसी शिक्षण विधि का प्रयोग अवश्य करना पड़ता है। शिक्षिका को शिक्षण विधि का चयन करते समय विषयवस्तु, बालकों/विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं संसाधनों की उपलब्धता को ध्यान में रखना चाहिए। ऐसा न करने से शिक्षण कार्य सुचारू रूप से नहीं चल सकता। शिक्षण को महत्वपूर्ण और प्रभावी बनाने में शिक्षण-अधिगम विधियों का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत लेख में पूर्व प्राथमिक शिक्षा में शिक्षण-अधिगम विधियों के संदर्भ में विस्तृत चर्चा की गयी है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में शिक्षण को प्रभावी और असरदार बनाने में उसे शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को कराने का तरीका अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जो भी शिक्षण-अधिगम कराया जाता है उसे व्यावहारिक रूप देना आवश्यक होता है। शिक्षण-अधिगम को सही विधियों द्वारा लागू करने से शिक्षण प्रभावशाली बन जाता है और अधिक समय तक बच्चों के मस्तिष्क में उसकी छाप बनी रहती है। शिक्षण को महत्वपूर्ण और अर्थपूर्ण बनाने में शिक्षण-अधिगम विधियों का प्रयोग किया जाता है। यह विधियाँ दो प्रकार की होती हैं—मौखिक और दृश्यात्मक।

मौखिक शिक्षण विधि

इसमें हम इस शिक्षण प्रक्रिया में बोलकर बच्चों से विषय पर चर्चा कर सकते हैं। इसके अंतर्गत निम्न क्रियाएँ आती हैं—

- वार्तालाप
- वर्णन
- प्रश्नोत्तर

वार्तालाप

जब हम इस क्रिया का प्रयोग करते हैं तो हम बच्चों की भाषा का विकास कर रहे होते हैं। इसके द्वारा बच्चों में बोलने का अभ्यास कराना है कि वह अपने विचारों को प्रकट कर सके। वार्तालाप

**शिक्षिका*, आई.आई. टी. नर्सरी स्कूल, हौज़ खास, नयी दिल्ली – 110016

भी दो प्रकार की होती है। (क) मुक्त वार्तालाप (ख) संरचनात्मक वार्तालाप

(क) मुक्त वार्तालाप

इस क्रिया में बच्चों को स्वतंत्र रूप से कहने के लिए अवसर प्रदान किया जाता है। उन्हें जो कुछ भी कहना है, बोलना है या बताना चाहते हैं, कुछ भी विचार व्यक्त करना चाहते हैं तो उसे मुक्त वार्तालाप कहते हैं। इससे उनमें आत्मविश्वास और बोलने की क्षमता के साथ-साथ शब्द ज्ञान भी बढ़ता है तथा वह दूसरों की बात सुनते भी हैं तो श्रवण कौशल का विकास भी होता है। इस क्रिया में बच्चे मुक्त खेल में आपस में बातचीत करते हैं तो मौखिक कौशल का विकास होता है। जैसे बच्चे से पूछ लेना कि 'सुबह आते समय आपने क्या देखा?' इस पर बच्चे स्वतंत्र रूप से बोलने का प्रयास करते हैं। इसी प्रकार देखो और

(ख) संरचनात्मक वार्तालाप

जब बच्चे की भाषा विकास के साथ-साथ आत्मविश्वास, आत्माभिव्यक्ति कराई जाती है तो इसके लिए एक विषय दे दिया जाता है जैसे — होली। इस पर शिक्षिका प्रश्न पूछ कर या विषय की शुरुआत में होली को अपना मनपसंद त्योहार बताकर भी इस वार्तालाप की शुरुआत कर सकती है। बच्चों से पूछना कि इसमें क्या करते हैं? यह त्योहार कैसे मनाते हैं? आदि। बच्चों के विचारों को विषय तक लाना होता है। चाहे फिर वह किसी अन्य विषय की बात पर क्यों न आ जाएँ। बच्चों को फिर पूर्व में दिए गए विषय पर लाने के लिए शिक्षिका पुन: उसी विषय की बात शुरू करें लेकिन बच्चे बात को सुनकर उसे विषय से जोड़कर रखना, ताकि वह सामाजिक व्यवहार करना भी सीख सकें।

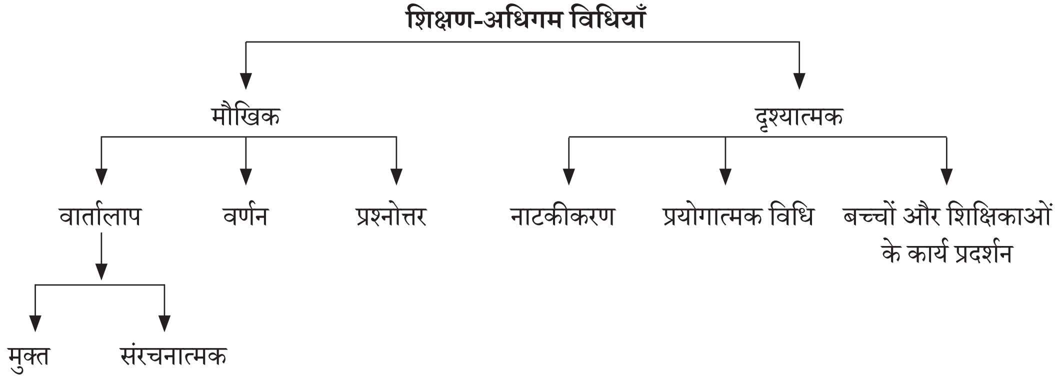

बताओ जैसी क्रिया में भी इसका प्रयोग किया जा सकता है कि कोई चित्र दिखाकर उस पर बताने के लिए कहना, कोई वाक्य बनाने के लिए कहना इससे बच्चों में अवलोकन शक्ति बढ़ती है।

वर्णन

किसी क्रिया, घटना, कहानी का वर्णन करना। यह भी शिक्षण की महत्वपूर्ण विधि है। इसमें किसी भी विषय (कहानी) का वर्णन करके बच्चों में सुनने की क्षमता

को बढ़ावा दिया जा सकता है। बच्चों की 'ध्यान केंद्रित' करने की क्षमता में वृद्धि करना। इसके लिए रुचिकर तरीके से कहानी, बालगीत, कठपुतली, फ्लेश कार्ड आदि की मदद से वर्णन किया जा सकता है। बच्चों का मनोरंजन करना उसकी सोचने की क्षमता को बढ़ाना, शिक्षिका के हावभाव से अनुकरण द्वारा बच्चे विषय को ध्यानपूर्वक समझते हैं क्योंकि वह भी उसे घर पर उसी प्रकार के हावभाव के साथ सुनाएगा।

प्रश्नोत्तर

इस विधि में कहानी सुनाते समय भी प्रश्न पूछ सकते हैं जिससे हमें बच्चों से तुरंत प्रतिक्रिया मिल जाती है। जैसे चिड़ियाघर का नाम बताकर उन्हें सब कुछ पता होता है और फिर ज़्यादा बताने की आवश्यकता नहीं होती है। बीच-बीच में प्रश्न पूछने से हमें यह भी पता चल जाता है कि बच्चों ने कितना समझा? इससे भी बच्चे की सुनने व बोलने की क्षमता में वृद्धि होती है। प्रस्तुतीकरण, प्रस्तावना आदि में प्रश्न पूछ सकते हैं। ऐसी खेल क्रियाएँ जिससे बच्चे के दिमाग में प्रश्न उठते हैं समस्या-समाधान तकनीक होती है जिसमें वह स्वयं ही हल ढूँढ़ता है। एक बना हुआ चित्र दे देना और उसी चित्र के टुकड़े देना जिसे बच्चा देखकर टुकड़े जोड़कर चित्र पूरा करता है। इस प्रकार बच्चे से प्रश्न पूछने से उनमें सोचने व बोलने की क्षमता बढ़ती है। प्रश्नोत्तर के उद्देश्य प्रत्येक आयु वर्ग के लिए भिन्न होते हैं जैसे 3-4 वर्ष में बच्चा एक शब्द में जवाब देकर उत्तर देता है। वह निर्णय लेता है लेकिन वह आत्मनिर्भर नहीं होता। वहीं 5-6 वर्ष का बच्चा बिना किसी की मदद से पज़्लस, ब्लॉक्स, पहेली सुलझा पाता है।

कारण और प्रभाव संबंध—किसी क्रिया को करने से उसमें क्या परिवर्तन हुआ है? यह सहसंबंध भी, प्रश्नोत्तर विधि में ही सम्मिलित है जिसमें हम बच्चों को ताला-चाबी, बैट-बॉल जैसे सहसंबंध बता सकते है। हमें बच्चों के समक्ष ऐसे प्रश्नों को रखना चाहिए जो उनकी समझ और सोच को विकसित करें। जैसे—पत्थर को पानी में डालेंगे तो क्या होगा? डूबेगा या तैरेगा। बस छूट गई है तो क्या करोगे? इत्यादि प्रश्नों द्वारा हम बच्चों को भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में समाधान ढूँढ़ने के लिए तैयार करा सकते हैं कि वह आगे भविष्य में भी इन्हें कैसे सुलझा सकते हैं। बच्चों द्वारा उत्तर सुनकर सही उत्तर सभी को बताना। इस प्रकार उनमें सोचने, कल्पना करने, तर्कशक्ति और मौखिक कौशल का भी विकास होता है। बच्चों को सही उत्तर बताने पर उसका कारण भी बताना चाहिए कि ऐसा ही क्यों करेंगे। बच्चे उसे अपने मानसिक और संज्ञानात्मक विकास के अनुसार ही ग्रहण करेंगे। जो भविष्य में उन्हें संबंधित विषय के प्रत्ययों को स्पष्ट करने में सहायता करेगा। यह कारण और प्रभाव संबंध बच्चों की आयु वर्ग को ध्यान में रखते हुए भी प्रयोग किया जाना चाहिए। इस प्रकार प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग कर बच्चों के मन में उठने वाले अनेक प्रश्नों का समाधान किया जा सकता है।

मौखिक शिक्षण विधियों द्वारा बच्चों के बोलने और सुनने के कौशल के विकास के साथ ही विषय के प्रति उनकी रुचि, विचारों की अभिव्यक्ति, शब्द ज्ञान व भंडार में वृद्धि, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता, मनोरंजन और आत्मविश्वास को भी प्रोत्साहन मिलता है।

दृश्यात्मक शिक्षण विधि

दृश्यात्मक शिक्षण तकनीक मौखिक तकनीक की अपेक्षा अधिक प्रभावकारी है। इस तकनीक द्वारा विषय को अधिक रुचिकर बनाया जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप उसका प्रभाव अधिक समय तक बच्चों के मन और मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है। दृश्यात्मक शिक्षण तकनीक में हम निम्न क्रियाओं व विधियों का प्रयोग कर सकते हैं—

- नाटकीयकरण
- प्रयोगात्मक विधि
- बच्चों और शिक्षिकाओं का कार्य प्रदर्शन

नाटकीयकरण

इस तकनीक में बच्चों की आयु अनुसार कहानी, कविता सुनाकर फिर पुनरावृत्ति में नाटकीयकरण करवाया जाता है। सुनी हुई कहानी का वाक्यों, हावभावों द्वारा अभिनय किया जाता है। इसी प्रकार किसी व्यक्ति, वस्तु आदि का अभिनय करवा सकते हैं जैसे—शिक्षक, डॉक्टर इत्यादि। बच्चों को परिस्थिति बता कर अभिनय व नाटक भी करवाया जा सकता है, जैसे—दुकानदार और ग्राहक, शिक्षक और (बच्चा/विद्यार्थी की वार्तालाप) करना आदि। इस प्रक्रिया में बच्चे अपनी व्यक्तिगत क्षमता और आयु वर्ग के अनुसार संवाद बोलने में मदद और प्रोत्साहन देने की आवश्यकता होती है। बच्चे आयु अनुसार स्वयं भी संवाद बनाकर नाटक कर सकते हैं।

प्रयोगात्मक विधि

इसके द्वारा बच्चों पर क्रिया का प्रभाव स्थायी हो जाता है। जो बात व विषय वे सुनकर इतना अच्छा ग्रहण नहीं कर पाते हैं, उसे वे देख कर स्थायी व मूर्त प्रत्यय का निर्माण करने में समर्थ होते हैं। प्रयोग द्वारा बच्चों को वास्तविक अनुभव तो मिलता ही है वरन् साथ में उसके मूर्त रूप से भी अवगत होते हैं। यदि हम बच्चे को यह बताएँ कि पानी का कोई रंग नहीं होता है तो वे अवश्य उसे सफ़ेद रंग का बताते हैं और जब हम यही प्रयोग द्वारा करके दिखाते हैं, तो वे इसे स्थायी रूप से समझ जाते हैं। जिसके परिणामस्वरूप वे उसे अपने आगामी अध्ययन से भी सहसंबंध कर पाते हैं। प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग हमेशा आयु वर्ग को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए जैसे 3–4 साल का बच्चा केवल देख सकता है। संभव है कि कुछ देखकर भी न समझ आए क्योंकि समझने की शक्ति नहीं होती है और न ही ध्यान केंद्रित करने की क्षमता ही विकसित हो पाती है। अत: यह केवल एक जादू या खेल क्रिया की भाँति ही होता है। वहीं 4–5 साल का बच्चा रुचि लेगा, समझने का प्रयास करेगा। स्वयं करके देखने के लिए भी तत्पर होगा।

बच्चों और शिक्षिकाओं का कार्य प्रदर्शन

कक्षा में बच्चों और शिक्षिकाओं द्वारा किया जाने वाला कार्य प्रदर्शन कक्षा की सुंदरता को ही नहीं बढ़ाता अपितु विषय-वस्तु की स्पष्टता, बच्चों की रुचि व एकाग्रता को भी सुनिश्चित करता है। समय-समय पर यह प्रदर्शन विषय-वस्तु के अनुसार बदलता रहना चाहिए और बच्चों को भी इससे अवगत कराते रहना चाहिए। कक्षा के कार्यक्रम अनुसार विषय-सामग्री का बदलाव सभी को कक्षा की प्रगति और विकास के बारे में भी बताता है। शिक्षिका के कार्य

प्रदर्शन से बच्चों को प्रोत्साहन मिलता है। विषय संबंधी ज्ञान व प्रत्ययों को सुनकर तथा प्रदर्शित रूप से देखकर बच्चों का मूर्त प्रत्यय निर्माण होता है और वे विषय का स्पष्टता से सह-संबंध स्थापित कर पाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि शिक्षिका बच्चों को कोई कहानी सुनाती हैं और साथ ही उसका एक-एक घटना क्रम का चित्र दिखाकर उसका कक्षा में प्रदर्शन भी करती हैं तो बच्चों को वह कहानी क्रम से याद भी हो जाती है। वह रोज़ उसे देखेंगे और उस पर चर्चा करेंगे तो इस प्रकार उनके घटनाक्रम को याद रखने और उसे क्रम से बताने और चित्रों को क्रम से लगाने की भी योग्यता का विकास होता है। केवल शिक्षिका के कार्य प्रदर्शन से नहीं वरन् बच्चों द्वारा किए गए कार्य के प्रदर्शन से भी बच्चों को खुशी मिलती है कि उनके काम को भी कक्षा में प्रदर्शित किया गया है। उदाहरण के लिए, फ्री हैण्ड ड्रॉइंग में बच्चे अपने बनाए गए चित्रों को स्पष्टता से समझते हैं और अपने मित्रों से भी इस पर चर्चा करके संतुष्ट होते हैं। इस कार्य प्रदर्शन से उनमें 'स्व' की भावना का विकास होता है तथा अभिभावक भी देखकर समझ पाते हैं कि कक्षा में बच्चे के काम का क्या स्तर है। वे बच्चे की क्रियाओं के प्रदर्शन से शिक्षिका और विद्यालय की कार्य-प्रणाली से भी अवगत हो पाते हैं।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मौखिक एवं दृश्यात्मक शिक्षण विधि बच्चों की शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान निभाती है, लेकिन दृश्यात्मक विधि से अधिक अच्छे परिणाम सामने आते हैं। मौखिक विधि की अपेक्षा यह अधिक अच्छी व प्रभावशाली सिद्ध होती है क्योंकि—

- यह मूर्त है और बच्चे इसे देखकर अधिक स्पष्टता से विषय-वस्तु को समझ सकते हैं।
- बच्चे सुनने के साथ देखकर अधिक स्थायी ज्ञान प्राप्त करते हैं।
- देखकर जो समझ आता है उसकी छवि/छाप लंबे समय तक मस्तिष्क में बनी रहती है।
- विषय-वस्तु का ज्ञान देखकर अधिक शीघ्रता से समझ आता है।
- आँखों की माँसपेशियों का विकास होता है।
- अवलोकन क्षमता का विकास होता है।
- सौंदर्यानुभूति का अनुभव करना सीखते हैं।
- वातावरण को सुंदर, अच्छा बनाने के लिए।
- बच्चों में एकाग्रता आती है। यह उनका ध्यान आकर्षित कर उनमें एकाग्रता को बढ़ाती है।
- छात्र और शिक्षिका के बीच में एक जोड़ है क्योंकि क्रियाओं द्वारा बच्चों को समझने में मदद मिलती है।

इन विधियों का प्रयोग करते समय पूर्व प्राथमिक शिक्षिकाओं को निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- यह बच्चों की आयु-वर्ग को ध्यान में रख कर प्रयोग करनी चाहिए।
- बच्चों के मानसिक स्तर, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता का ज्ञान होने पर इनका प्रयोग करना चाहिए।
- इन्हें सरल से जटिल, मूर्त से अमूर्त के क्रम में प्रयोग करना चाहिए।
- व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखना चाहिए।
- बच्चों को भी स्वयं करके सीखने के अवसर प्रदान करने चाहिए।

- यह शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने में सहायक होनी चाहिए।
- रोचक व मनोरंजनपूर्ण होनी चाहिए। प्रयोगों की नीरसता से बचना चाहिए।
- बच्चों को उचित अवसर और प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए।
- बच्चों की तुलना व अवहेलना नहीं करनी चाहिए। उनमें आत्मविश्वास, आत्माभिव्यक्ति, एकाग्रता को बढ़ाना चाहिए।
- बच्चों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इनका प्रयोग करना चाहिए।
- ज्ञात से अज्ञात, पूर्णत: से अंशत: के क्रम को ध्यान में रखते हुए क्रियाएँ कराई जानी चाहिए अन्यथा आयोजन अर्थविहीन हो जाएगा।
- बच्चों में समायोजन, माँसपेशियों का विकास, स्वतंत्रता, भाषा, प्रत्यय-निर्माण, सामाजिक कौशल आदि सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लचीली होनी चाहिए।
- इन विधियों के प्रयोग द्वारा विषय संबंधी ज्ञान का मूल्यांकन किया जा सकता है यह बच्चों के विकास में कितनी उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

अत: इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षण-अधिगम को प्रभावशाली और रोचक बनाने हेतु इन विधियों/तकनीकों का आयु-वर्ग के अनुसार प्रयोग करना पूर्व-प्राथमिक शिक्षण के स्तर और उद्देश्यों को पूर्णत: स्पष्ट करता है। किसी भी पाठ्यक्रम की योजना को कार्यान्वित करने में यह अपनी अहम भूमिका निभाती है। बच्चे आत्म-प्रस्तुतीकरण कर अनुभव द्वारा व्यावहारिक जीवन में समस्याओं के समाधान ढूँढ़ सकें और अपने वर्तमान को समझते हुए भविष्य के लिए तैयार हो सकें यही इनका ध्येय होना चाहिए।

निष्कर्ष

बच्चे की ज्ञान-अर्जन की प्रक्रिया में शिक्षण विधियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यदि उचित शिक्षण विधि का चयन नहीं किया जाता तो शिक्षण प्रक्रिया प्रभावहीन व अर्थहीन होकर रह जाएगी। हर आयु वर्ग के लिए भिन्न-भिन्न शिक्षण विधियों की आवश्यकता होती है तथा हर विषय को पढ़ाने के लिए भी अलग-अलग प्रकार की शिक्षण विधियों का चयन करना पड़ता है। जैसे विज्ञान का ज्ञान देने के लिए सिद्धांत के साथ-साथ प्रायोगिक ज्ञान भी आवश्यक होता है। भाषाओं के शिक्षण में व्याकरण के साथ-साथ उच्चारण भी सिखाने होते हैं। इसी प्रकार पूर्व प्राथमिक शिक्षा में खेल-विधि को प्रयोग किया जाना चाहिए। लेकिन उच्च स्तर पर खेल विधि अर्थहीन हो जाती है। अत: इन सभी शिक्षण विधियों का ज्ञान तथा मनोवैज्ञानिक आधार शिक्षिकाओं के लिए इस युग में अतिआवश्यक है। उसी प्रकार बच्चों को ज्ञान प्रदान करने की आधुनिक विधियों का ज्ञान भी एक शिक्षिका के लिए अतिआवश्यक हो चुका है।